

योग दर्शन - महर्षि पतंजलि - योग-सूत्र (चार पादों में विभक्त है)

समाधिपाद - साधना पाद - विभूतिपाद - कौटिल्यपाद

सांख्य की तरह
अनन्यता

(६) पतंजलि की चित्त और चित्त-वृत्तियों की अवधारणा

योग-सूत्र पर आधारित
योगशास्त्र - व्यास

→ भारतीय दर्शन के चार आदर्श हैं -

- धर्म

- अर्थ

- काम

- मोक्ष

योग-सूत्र पर टीका
तत्त्ववेत्ता - तत्त्वज्ञान
मिश्र

→ मोक्ष मानव जीवन का परमपुरुषार्थ है, जिसकी प्राप्ति -
'तत्त्वज्ञान' से हीना है इस तत्त्वज्ञान या आत्मसाक्षात्कार
के लिए 'योग-साधना' की आवश्यकता होती है।

→ सांख्य मोक्ष प्राप्ति के वैज्ञानिक पथ पर चल देते हैं जबकि
योग इसके 'व्यवहारिक' पथ पर चल देते हैं।

ए प्रायोगिक साधना

→ षडधेय + ज्ञान + कौटुम्बिक + सती - योग साधना भावनात्मक
मात्रेण।

→ अविकल्प यदि का निर्विकल्प 'प्रज्ञा' में परिणत कहे हों
योग-साधना की उपादेयता वहेभाव्य है।

→ गीता में - ज्ञानयोग
भक्तियोग
कर्मयोग
ह्यातयोग का वर्णन पाते हैं।

→ योग दधेय - सांख्य के तत्त्वमीमांसा + जातमीमांसा को ठीक
रूप में स्वीकार करते हैं।

→ योग तत्त्वमीमांसा के सिर्फ एक तत्त्व - 'इश्वर' को जोड़ते हैं।
इसलिए योग दधेय को - 'इश्वर' सांख्य कहा जा रहा है।

इश्वर - निरीश्वर

25 + 1 (इश्वर - इश्वर) 26

→ जातमीमांसा में प्रमाण-त्रयी - प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द मान्य हैं।

→ योग का अर्थ

→ योग का सामान्य अर्थ — जीवात्मा का परमात्मा से मिलन

गीता में योग की — दुःख-संयोग का विधोऽ

→ गीता में ही योग की — चित्त-निरीध
समत्प
ब्रह्म-भाव } कहा गया है।

→ गीता के अनुसार योग में — मान + कर्मा + भक्ति का समन्वय ही योग

* पतंजलि योग-सूत्र में योग का अर्थ

→ योग अर्थात् 'युज्' धातु से बना है जिसका अर्थ — 'समाधि'

→ यहाँ योग का अर्थ — 'चित्तवृत्तिनिरीध' (प्रयत्नमात्र) है।

→ चित्तवृत्तिनिरीध समाधि में होता है (योगः समाधिः)।

→ इसलिए योग की समाधि भी कहा जाता है।

✓ * पतंजलि योग का मूलभूत उद्देश्य — मन के अशुद्धि का समापन
(Cessation of modification of mind)
(D-12 page)

→ चित्त का अर्थ है — 'अन्तःकरण'

✓ → (अन्तःकरण में — बुद्धि, अहंकार और मन तीनों काहे हैं।)

* चित्तवृत्तियों के प्रकार —

युक्त — चित्तवृत्तियाँ पाँच प्रकार के होती हैं :

अव्ययान 1 प्रमाण — प्रमाण भी तीन हैं —
प्रत्यक्ष, अनुमान, और शब्द

मिथ्या ज्ञान (2) विपर्यय - मिथ्याज्ञान एव- सत्य सत्य का ज्ञान

मिथ्या ज्ञान (3) विकल्प - आदक ज्ञान से उत्पन्न होने वाला सत्य व मिथ्या ज्ञान
या कल्पना मात्र है।
एव- आदक-अदक

आदक (4) निंदा - ज्ञान की अभाव मानी जाती है।

आदक (5) स्मृति - संस्कारजन्य ज्ञान है।

* कर्मा - कर्मों से कलेश और कलेशों से कर्म उत्पन्न होते हैं।

कलेश के प्रकार - पाँच

1. आविद्या
2. अस्मिता
3. राग
4. द्वेष
5. अभिनिवेश

7 आविद्या - अनित्य, अशुद्ध, दुःख तथा अनात्म में निश्चय
शुद्धि, सुख और आत्मबुद्धि एवम् आविद्या है।
यह मिथ्या ज्ञान है।

अस्मिता - पुरुष और चित्त निताद्वय है, लेकिन
दोनों को एक मान लेना अस्मिता है।

राग - विषयबुद्धि की तृष्णा या आसक्ति (राग) है।

द्वेष - सुख के अवलोकक और दुःख के उत्पादक के
प्रति जो क्रोध एवं घृणा का भाव है उसे द्वेष
कहते हैं।

अभिनिवेश - प्रत्येक प्राणी में जीवन की आसक्ति
और मृत्यु का भय स्वाभाविक रूप से
विद्यमान होता है, इसी को अभिनिवेश
कहते हैं।

* चित्तप्रतिनिवेश - आप भी कलेशों से मुक्ति प्राप्त है।